International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

मध्यकालीन भक्ति संतो में तुलसीदास

पवन कुमार प्रवक्ता

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय

उखलचना झज्जर

सारांश

भक्ति प्राचीन काल से ही मानव जीवन का एक अंग रही है । प्राचीन काल से हमे साहित्यिक एवं पुरातात्विक दोनों तरह के साक्ष्यों से मनुष्य की भक्ति भावना के बारे में पता चलता है । समय अंतराल पर भक्ति का स्वरूप भी बदलता चला गया । दक्षिण भारत में आळ्वार और नयनार संतो द्वारा भक्ति की शुरुआत किये जाने से भक्ति की धारा तेजी से बही जिसमे अनेक संतो ने अपने अपने ईष्ट देव की आराधना में भक्ति का प्रचार करना शुरू कर दिया था। इस समय (मध्यकाल) में संतो ने राम और कृष्ण की भक्ति का प्रचार प्रसार करना शुरू कर दिया था । इन राम भक्त संतो में अनेक ऐसे संत हुए है जिन्होंने भगवान् राम को सगुन एवं निर्गुण रूप में अपनी भक्ति का माध्यम बनाया है । प्रस्तुत लेख में एक ऐसे ही संत गोस्वामी तुलसीदास के बारे में बताया गया है जिन्होंने भगवान् राम की सगुन रूप में भक्ति की है ।

मध्यकालीन भक्ति संतो में तुलसीदास

मध्यकालीन भक्ति प्राचीन भक्तिधारा का विस्तार था जो नई अवतारित अवधारणाओं के संदर्भो में प्रचारित हुयी, भक्ति के साथ व्यक्तिक संबंध

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

स्थापित करना एक आवश्यक शर्त है, अवतारों में भी राम और कृष्ण के अवतारों से संबंधित भक्ति का अधिक प्रचार हुआ है,भगवान कृष्ण का गीता वाला रूप बना तो रहा लेकिन भक्ति क क्षेत्र में वह गोपीजन बल्लभ के रूप में भी आराध्य माने जाते रहे है, उत्तर भारत में भक्ति के प्रचार में स्वामी रामाँनन्द और महाप्रभु बल्लभाचार्य का योगदान रहा है । कालांतर में रामानंद की भक्ति परम्परा की दो शाखाये हो गयी- एक निर्गुणमार्गी राम भक्तो की तथा दूसरी सगुन रामभक्ति की । राम की उपासना अवतारी रूप में की जाती रही है, इस शाखा के आदर्श भक्त कवि गोस्वामी तुलसीदास है और निर्गुणमार्गी शाखा के कवि संत कबीर है ।

तुलसीदास

गोस्वामी तुलसीदास रामकाव्य परम्परा के सबसे महान कवि है । तुलसीदास ने स्वयं अपनी जन्मतिथि के बारे में कुछ नहीं लिखा है । विभिन्न विद्वानों के मध्य उनकी जन्मतिथि को लेकर विवाद है, शिवसिंह सेंगर महोदय ने तुलसीदास की जन्मतिथि १५८३ के आसपास बताई है । अनेक विद्वान् उनका जन्म १५३२ ईस्वी में बांदा के राजपुर नामक ग्राम में मानते है[1] । पंडित रामगुलाम द्विवेदी ने तुलसीदास का जन्म संवत 1589 माना है । इस जन्म तिथि के बारे में अधिकतर विद्वान सहमत हैं गोसाईं चरित तुलसीदास तुलसी चरित्र में इनका जन्म स्थान राजापुर बताया गया है । पंडित गौरीशंकर द्विवेदी और रामनरेश त्रिपाठी ने तुलसीदास का जन्म स्थान सोरो को बताया है । बांदा जिले के गजट ईयर में तुलसीदास को सोरो से आया हुआ बतला कर उनके राजापुर में बस जाने की बात लिखी है ।[2] डॉ हजारी प्रसाद का इस संबंध में कहना है "मुझे सोरो के प्रामाणिक या अप्रामाणिक होने के पक्ष में कुछ नहीं कहना है जहां तक पुस्तकों से पढ़कर समझने का प्रश्न है, मेरा विचार है कि सोरो के पक्ष में दिए जाने वाले प्रमाण बहुत महत्वपूर्ण न

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

होते हुए भी काफी वजनदार है, उन को यूंही टाला नहीं जा सकता।[3]" इनका जन्म कान्य- कुब्ज ब्राहमण परिवार में हुआ था । इनके पिता का नाम आत्माराम तथा माता का नाम हुलसी था । कहा जाता है कि मूल नक्षत्र में जन्म लेने के कारण इनके माता-पिता ने इन्हें त्याग दिया था[4] । इनके गुरु नरहरि ने इनका पालन पोषण किया । नरहरि का स्मरण उन्होंने कृपा सिंधु नर रूप हरि के रूप में किया है। तुलसीदास का विवाह दीनबंधु पाठक की पुत्री रत्नावली से हुआ । तुलसीदास की अपनी पत्नी के प्रति गहरी आसक्ति थी । प्राप्त कथाओं के साक्ष्य के आधार पर कहा जाता है कि एक बार रत्नावली उनकी अनुपस्थिति में अपने मायके चली गई । तुलसीदास पीछे-पीछे वहां जा पहुंचे । जिसके कारण रत्नावली ने इनकी भर्त्सना की:-

"लाज न आवत आपको दौरे आयहु साथ
धिक् धिक् ऐसे प्रेम को कहां कहूं मैं नाथ
अस्थि चर्म मय देह मम तामे जैसी प्रीति
तैसी जो श्री राम मह होती न तो भवभीति"[5]

तुलसीदास को इन शब्दों से बहुत आत्मग्लानि हुई और हमेशा के लिए गृह त्याग करके राम भक्ति में लीन होकर इधर उधर भटकते रहे और अंततः अयोध्या जाकर रहने लगे । जिस समय वे रामचरितमानस की रचना कर रहे थे उसी समय बाहुमूल पीड़ा का रोग हो गया और अंत में उन्होंने देह को त्याग दिया ।

तुलसीदास की रचनाएं

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

गोस्वामी तुलसीदास के प्रामाणिक ग्रंथों की संख्या 12 बताई जाती है[6] । पंडित रामगुलाम द्विवेदी ने उनकी इन रचनाओं की प्रामाणिकता सिद्ध की है । वैराग्य संदीपनी, रामचरितमानस, रामललानहछू, बरवै रामायण, पार्वती मंगल, कवितावली, जानकी मंगल, रामाज्ञा प्रश्न, दोहावली, गीतावली, श्री कृष्ण गीतावली, विनय पत्रिका इनकी रचनाये थी[7] । डॉ माता प्रसाद ने इन 12 के अतिरिक्त तुलसी सतसई को भी इनकी रचना माना है । दोहावली, कवितावली, गीतावली, रामचरितमानस और विनय पत्रिका बड़े ग्रंथ है तथा रामलला नहछू, पार्वती मंगल, बरवै रामायण, वैराग्य संदीपनी और कृष्ण गीतावली छोटे ग्रंथ । रामलला नहछू तुलसीदास जी की प्रथम रचना मानी जाती है । यह भगवान राम द्वारा जनेऊ धारण करने के अवसर पर लिखी गई थी । वैराग्य संदीपनी रचना में दोहा चौपाई छंद को अपना संत महिमा का गान किया गया है। विनय पत्रिका में विनय के पद के माध्यम से तुलसीदास ने अपने आराध्य देव राम के प्रति आत्मनिवेदन किया है । तुलसीदास की श्रेष्ठ रचनाओं में से कवितावली भी एक है जिसे तुलसीदास की अंतिम रचना माना जाता है । कवितावली में कवित्त, सवैये आदि छंदो में श्री राम के पावन चरित्र का चित्रण किया गया है । इस रचना में भी रामचरितमानस की तरह सात कांड है लेकिन इसमें वैसा विस्तार और विकास नहीं मिलता जैसा रामचरितमानस में मिलता है । गीतावली पदों में लिखी गई रचना है । इसमें भी भगवान राम की कथा का उल्लेख है । बहुत से विद्वानों का मानना है कि तुलसीदास जी ने गीतावली की रचना सूरदास की सूरसागर से प्रेरित होकर की है । इसमें गीत है और गेय पदों में ही इसकी रचना हुई है ।

तुलसीदास की प्रसिद्धि उनकी रचना रामचरितमानस पर आधारित है । इस रचना में भक्ति भावों की उत्कृष्टता और कवित्व की अपूर्व शक्ति है । इसमें रामकथा का विस्तृत विवरण है । यह ग्रंथ सात खंडों में विभाजित है- बालकांड, अयोध्याकांड , अरण्यकांड, किष्किंधाकांड, सुंदर कांड, लंका कांड, उत्तर कांड । रामचरितमानस को संपूर्ण हिंदी साहित्य की सर्वश्रेष्ठ रचना माना जाता है ।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

भाषा:-

तुलसीदास ने अपनी रचनाओं के लिए अवधी भाषा को माध्यम बनाया है । तुलसी ने अवधी भाषा का जैसा परिष्कर किया, सभी भाषा विज्ञानियों ने उनकी सराहना की है । वे कविता की भाषा को सवारना जानते हैं । समाज और धर्म के स्वरूप में एकता लाने में उन्होंने जिस समन्वय दृष्टि का परिचय दिया है वही समन्वय उनके भाषा प्रयोग में भी दिखाई देता है । मलिक मोहम्मद जायसी ने भी पद्मावत नामक अपनी रचना में अवधी का प्रयोग किया है, लेकिन तुलसी की भाषा प्रत्येक परिस्थिति में अनुकूल परिवर्तन ग्रहण कर लेती है ।

काव्यात्मक विशेषताएं:

तुलसीदास जी ने राम भक्ति के सगुण रूप को स्वीकार किया है कबीर के तुरंत बाद जो सगुण रूप की भक्ति धारा कि जो धारा बही उसने संपूर्ण संस्कृति और साहित्य को पल्लवित कर दिया । तुलसीदास ने यह घोषणा कर दी थी कि मेरे आराध्य राम वही राम है जिन्होंने दशरथ के घर में अवतार लिया है[8] । वे मानते थे कि भक्ति के लिए निर्गुण ब्रह्मा भी सगुण हो जाता है-

"फूले कमल सोह कैसा निर्गुण ब्रह्मा सगुन भये जैसा"[9]

तुलसीदास की भक्ति भावना में अवतारवाद का सिद्धांत है । भगवान राम को एक अवतारी मानकर उनकी आराधना में लगे रहते थे । अवतारवाद एक आशावादी दर्शन है । अवतारवाद अद्वैतवाद का कलात्मक रूप है । मध्यकाल के घोर अंधकार में अवतारवाद हिंदू धर्म का जीवन ज्योति बन गया था । तुलसीदास ने अवतारवाद का कारण वही बताया है जो गीता में कृष्ण जी स्वयं बताया है । वे कहते हैं:

"जब जब होई धर्म की हानि

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

बाढ़हि असुर अधम अभिमानी

तब तब प्रभु धरि विविध शरीरा

हरहि कृपा निधि सज्जन पीरा"

उनके अवतार वाद का सिद्धांत रामचरितमानस में उल्लेखित किया गया है ।

तुलसीदास के व्यक्तित्व के दो पक्ष हमें दिखाई देते हैं एक समाज सुधारक या धर्म नेता तथा दूसरा महाकवि के रूप में । तुलसीदास हिंदू धर्म को संकीर्णता से मुक्त कराना चाहते थे । समाज में धर्म के महत्व से परिचित तुलसीदास धार्मिक पाखंड के प्रबल विरोधी थे । वह पाखंडी ब्राह्मण ज्ञानियों से भी भली भांति परिचित थे ।

"ब्रह्मज्ञान बिनु नारी नर करहि न दूसरी बात

कौड़ी लागी लोभ वश करहि बिप्र गुरु घात"

तुलसीदास सामाजिक मर्यादा के प्रबल समर्थक थे[10] । मर्यादा तुलसी के काव्य के सामाजिक पक्ष की रीड की हड्डी है । पार्वती के शिव परामर्श के ना मानने तथा सीता के लक्ष्मण रेखा के पार करने पर जो कुछ हुआ वह सामान्य प्राणी को अमर्यादित होने पर उत्पन्न प्रतिक्रिया की सूचना देने के लिए पर्याप्त है । तुलसी की समान दृष्टि, उपयुक्त समन्वय और उपयुक्त भक्ति की त्रिवेणी है ।

अलंकार तुलसीदास के काव्य की एक प्रमुख विशेषता है । वे अलंकारों के प्रयोग में भी सक्षम थे । तुलसीदास के रामचरितमानस में रूपक और उपमा अलंकार का प्रमुखता से उपयोग हुआ है । तुलसीदास का सर्वप्रिय अलंकार रूपक है । विनय पत्रिका में भी उन्होंने रूपक अलंकार का प्रयोग किया है । विनय पत्रिका का अलंकरण जिस प्रकार का है वह हिंदी साहित्य में अद्वितीय है । कवितावली रचना का अलंकरण उपमा, संदेह,

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

विरोधाभास इत्यादि में विशेष रमणीय है । तुलसीदास की रचना गीतावली का प्रधान अलंकार उत्प्रेक्षा है ।

तुलसीदास ने अपनी रचनाओं में प्रकृति के सौंदर्य का वर्णन किया है । तुलसीदास ने अधिकतर उद्दीपन आत्मक प्रकृति चित्रण किए हैं किंतु रामचरितमानस के किष्किंधा कांड में उपदेशात्मक प्रकृति चित्रण भी अच्छा किया है । गीतावली का चित्रकूट चित्रण तुलसीदास के प्रकृति प्रेम का सूचक तो है ही उनकी उद्देश्य सजगता में अलंकार क्षमता का उत्कृष्ट उदाहरण भी है ।

निसंदेह गोस्वामी तुलसीदास मध्यकालीन भक्ति संतों में राम भक्ति धारा के सर्वश्रेष्ठ कवि थे। वह सचमुच भक्ति धारा की आत्मा थे । इतिहासकार विंसेंट स्मिथ ने कहा है, " अकबर का साम्राज्य समाप्त हो चुका है किंतु तुलसी का साम्राज्य विद्यमान है ।"[11]

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

संदर्भ सूची

1 लईक अहमद मध्यकालीन भारतीय संस्कृति , 48

2 शर्मा डॉक्टर शिवकुमार हिंदी साहित्य युग और प्रवृत्तियां अशोक प्रकाशन नई दिल्ली , पृष्ठ 227 पृष्ठ

3 वही

4 शर्मा, डॉक्टर श्रीनिवास हिंदी साहित्य का इतिहास तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ 55

5 लईक अहमद पूर्वोक्त 48

6 डॉ नगेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 188

7 शर्मा डॉक्टर हरबंस लाल हिंदी साहित्य का इतिहास भक्तिकाल शिवालिक प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ 82 83

8 दिनकर रामधारी संस्कृति के चार अध्याय पृष्ठ 378

9 राधे शरण मध्यकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकैडमी पृष्ठ 321

10 रामप्रसाद विश्व कवि तुलसी और उनके काव्य सूर्य प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ 26

11 उपरोक्त पृष्ठ 23